[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 7916 IC

Unique Paper Code : 12051502

Name of the Paper : हिंदी नाटक/एकांकी

Name of the Course : B.A. (H) Hindi – CBCS

Semester : V

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (9×3=27)

(क) दुनिया में हाथ पैर हिलाना नहीं अच्छा।
मर जाना पै उठके कहीं जाना नहीं अच्छा।।
बिस्तर पे मिस्ले लोथ पड़े रहना हमेशा।
बंदर की तरह धूम मचाना नहीं अच्छा।।
"रहने दो जमीं पर मुझे आराम यहीं है।"
छेड़ों न नक्शेपा हैं, मिटाना नहीं अच्छा।

P.T.O.

Scanned by CamScanner

अथवा

उपजा इश्वर कोप से, औ आया भारत बीच।
छार-खार सब हिंद करूँ मैं, तो उत्तम नहिं नीच।
मुझे तुम सहज न जानो जी, मुझे इक राक्षस मानो जी।
कौड़ी-कौड़ी को करूँ, मैं सबको मुहताज।
भुखै प्रान निकालूँ इनका, तो मैं सच्चा राज।

(ख) कुछ नहीं, मैं केवल यही कहना चाहती हूँ कि पुरुषों ने स्त्रियों को अपनी पशु-संपत्ति समझकर उन पर अत्याचार करने का अभ्यास बना लिया है। वह मेरे साथ नहीं चल सकता। यदि तुम मेरी रक्षा नहीं कर सकते, अपने कुल की मर्यादा, नारी का गौरव नहीं बचा सकते, तो मुझे बेच भी नहीं सकते हो। हाँ! तुमलोगों को आपत्ति से बचाने के लिए मैं स्वयम् यहाँ से चली जाऊँगी।

अथवा

रोष है, हाँ, मैं रोष से जली जा रही हूँ। इतना बड़ा उपहास-धर्म के नाम पर स्त्री-आज्ञाकारिता की यह पैशाचिक परीक्षा, मुझसे बलपूर्वक ली गयी है। पुरोहित! तुमने जो मेरा राक्षस-विवाह कराया है, उसका उत्सव भी कितना सुंदर है! यह जन संहार देखो, अभी उस प्रकोष्ठ में रक्त सनी हुई शकराज की लोथ पड़ी होगी। कितने ही सैनिक दम तोड़ते होंगे, और इस रक्तधारा में तिरती हुई मैं राक्षसी-सी साँस ले रही हूँ। तुम्हारा स्वस्त्ययन मुझे शांति देगा ?

Scanned by CamScanner

(ग) धर्म, ईश्वर, भाग्य सबकी उँगलियों से घूमता
आदमी मिट्टी का लोदा चाक पर है झूमता।
नेकी, सच्चाई, शराफत धर के सब कुछ ताक पर।
थोड़े नकटे भी यहाँ इतरा रहे हैं नाक पर।
एक नारा ढलता है हर नई बरबादी के बाद
आसरम ही आसरम खुल गए आजादी के बाद।

अथवा

हाँ! लेकिन यह बेताबी क्यों है ? देखो, आदमी के सामने सबसे बड़ा मसला यह है कि वह अपनी सरप्लस एनर्जी किस तरह काम में ले आए। आदिम जंगलीपन से लेकर आज तक की तहजीब तक जो कुछ भी आदमी ने अपने को दुखी या सुखी बनाने के लिए किया है, वह इस सरप्लस एनर्जी को काम में लाने के लिए। फिर दुःख या सुख तो इतनी ठोस चीजें हैं कि एक दिन तुम देखोगी कि यह यह शीशियों में बिका करेंगी, शीशियों में!

2. 'भारत दुर्दशा' नाटक के आधार पर भारतेंदु की राष्ट्रीय चेतना पर प्रकाश डालिए।

अथवा

'भारत दुर्दशा' नाटक की प्रतीकात्मरकता का सोदाहरण विवेचन कीजिए।

(12)

Scanned by CamScanner

3. 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक भारतीय नारी के स्वाभिमान का प्रतीक है – विवेचन कीजिए।

अथवा

'ध्रुवस्वामिनी' नाटक की रंगमंचीयता पर प्रकाश डालिए। (12)

4. 'बकरी' नाटक में निहित राजनीतिक व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

नाटक के तत्वों के आधार पर 'बकरी' नाटक की समीक्षा कीजिए। (12)

5. 'दीपदान' एकांकी की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'सूखी डाली' एकांकी पारिवारिक जीवन की विडंबनाओं का यथार्थपरक चित्रण है – विचार कीजिए। (12)

Scanned by CamScanner